142
581
P
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1306
1/7/91

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 581

8/1911 ✓

891.431
K962N

RECEIVED
10 DEC. 1930
DEPARTMENT
581
14

ओ३म

नमकीन जंग

ले०—नत्थाराम कुन्जबिहार

प्रकाशक—बाबूराम

प्रेम प्रिंटिंग प्रेस लाठीमुहाल कानपुर में मुद्रित

नमकीन जँग

तुम्हेगर बाग जलियां हरतरफ बनाना आता है।
शहीद हमकोभी अपने मुल्कपर होजाना आताहै॥
तुम्हारे पास बल है तोप और गोली तम्चे का।
हमेतो सिर्फ चरखा ही चलाना एक आता है॥
तुम्हारे दिलमें हैं अरमां मिटादें इनको दुनियासे।
हमेतो शौकसे खुद सूली पे चढ़ जाना आता है॥
एक दोको करो क्योंकैदएकदम हुक्मही देदो।
तुम्हे गर बेकसों पे ज़ुल्म हा का ढाना आताहै॥
न घबड़ावो करो कुछ सब्र देखो गौरकरके तुम।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 581
Date 14.12.71
GOVT. OF INDIA

तुम्हारे वास्ते गांधी लिये परवाना आता है ॥
नहीं वह जेलहै अ तो तपो भूमीहै रिषियों की।
जहां पर बन्द होने देशका दीवाना आता है ॥
जलाले जितना जीचाहे यह कहदो उससमारू से ।
नया हर रोज जलने के लियेपरवाना आता है ॥
हमें चस्मे रवां से जायगा नमकीन मिलता है।
हमारे आसुओंको क्यानमकबन जाना आताहै ॥
अगर जामे सहादतका पियो जो कुन्ज बिहारी ।
तो पीलों गाधी देखो लिये पैमाना आता है ॥

॥ गजल ॥

इधर नाजिल बलाये नागहानी देखते जावो ।
उधर उनके दमन की नौजवानी देखते जावो ॥

लगाते हो जिगर पर तीरे ज़र हम उफ नहीं करते।
जबां रखते हैं गोया बेजबानी देखते जावो॥
ये छींटेखून की उस दामने कातिल में कहती है।
शहीदाने वतन की ये निशानी देखते जावो॥
अभी लाखों ही बैठे हैं बुझाने को पियास अपनी।
खतम होजाय ना खंजर क पानी देखते जावो॥
इधर है सर झुका अपना है उनका हाथ कब्जेपर।
सरे बाजार होती है कुरबानी देखते जावो॥
अरेसाहब जिभा करने में क्यों मुह फेर लेते हो।
मेरी गरदन पे खन्जर की रवानी देखते जावो॥
करेगा कबतलक खूने नाहक मजलूमो का जालिम।
रहेगी कबतलक ये हुक्म रानी देखते जावो॥
हमारी आह से आतिस फड़क उठेगी दुनिया में।
अजब गर्दिश है रंगत आसमानी देखते जावो॥

है नथाराम गुलेगुलजार तुरबत होगई अपनी।
खुदा क बाद मुरदन मेहरबानी देखते जावो॥

दो०—धन्य तुम्हे महराज गांधी।
फिरत चौतरफ बाल क बांधी॥
गांधी के बचनो को मानौ।
धर्म देश अपना पहिचानो॥
देशी का प्रचार बढ़ावो।
देशी पहिनो देशी खावो॥
फिलट कोट पतलून उतारो।
बस्त्र स्वदेशी तन पर धारो॥

❁ गजल ❁

शहन्शाहों की अब यह हुक्म रानी देखते जाओ।
हमारे मुल्क की यह नागहान देखते जाओ॥
उठाया कत्लका बीड़ा है उस कातिल ने मक्तलमे।

देश आजाद अपना बनावो ॥
जुल्म जितने हो सब सहते जावो ।
हुक्म गांधी का वीरो बजावो ॥
धर्म मैदान में आ डटो तुम ।
देश के वास्ते मर मिटो तुम ॥
तेगा भाला न बर्छी उठाना ।
ईंटा पत्थर ना लकड़ी चलाना ॥
भाई नमकीन का जंग मचाना ।
सिर्फ शान्ती से होना रवाना ॥
है निमक जंग छिड़ा आगे आवो ।
हुक्म गांधी का वीरो बजावो ॥

तूने नस २ का खून पिया है बनके नागिन ये

दिल हर लिया है। तुमको लड़ने से हमने बचाया, तन व धन माल तुमपर लुटाया ॥ तुमरी एवज में गरदन कटाया जिस्से पानी के खूं था बहाया। किये जो २ ज़ुल्म सुनते जावो हुक्म गांधी बीरो बजावो ॥ बहनो घूंघट शरम को हटाना, तुमको होगा अब चरखा चलाना। बाग जलियां में खूं था बहाया अच्छा नेकी का बदला चुकाया, माता बहनो को ऐसा सताया, पेट के बल था तुम को रेंगाया। पार भारत की नैय्या लगावो। हुक्म गांधी का बीरो बजावो ॥